पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित:16.12.2020 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केवल 100 रू का सहयोग करें

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका को नियमित बनाये रखने के लिये केवल 100/– रू का सहयोग ''युवा उदघोष, A/N0. 20024363377, IFSCode. MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009 पर आनलाईन भेजें। – अनिल आर्य

वर्ष-37 अंक-14 पौष-2076 दयानन्दाब्द 197 16 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2020 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.12.2020, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 134वां वेबनार सम्पन्न

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने से मिटेगा पाखण्ड अंधविश्वास –आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री

शुक्रवार, 11 दिसम्बर 2020, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त की 56 वी पुण्यतिथि पर धर्म का सच्चा स्वरूप विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन जूम पर किया गया। यह कॅरोना काल में परिषद का 133 वा वेबनार था। वैदिक विद्वान आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री (आगरा) ने धर्म के सच्चे स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम सबको धार्मिक होने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा वर्णित आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करना होगा,सत्यार्थ प्रकाश उनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। परमेश्वर के वैदिक सिद्धान्तों का आचरण ही सच्चा धर्म है। वेद सृष्टि के आदि से है, वेद के विरुद्ध किया गया आचरण धर्म नही हो सकता। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में दो प्रकार के ग्रंथों की सूची दी है पठनीय और अपठनीय ग्रन्थ। उन्होंने कहा कि जो ग्रंथ वेद के अनुकूल है वही धर्म का सच्चा ज्ञान दे सकते है। यदि वेद न पढ़ सके तो जो लोग वेद के अनुकूल अपना आचरण करते है उनके आचरण को देख कर धर्म को सीखा जा सकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचनाओं से देश भक्ति, बंधुत्व की भावना, राष्ट्रीयता तथा मानवता के स्वर को मुखर किया। उनके जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट–कूट कर भरे हुए थे। उनकी सभी रचनाएं राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे। परन्तु अन्धविश्वासों और थोथे आदर्शों में उनका विश्वास नहीं था। वे भारतीय संस्कृति की नवीनतम रूप की कामना करते थे। उनकी ये पंक्तियां ष्जो भरा नहीं है भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं।वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहींष आज भी सुप्त रक्त में उबाल ले आती है। आज के कवियों को उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर और राष्ट्रीयता के लिए कार्य करना चाहिए। कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेता रमाकांत सारस्वत ने कहा कि महर्षि दयानन्द के स्वपनों को साकार करने के लिए आर्य समाजों को कृण्वन्तो विश्वमार्यम के उद्घोष को सार्थक करने के लिए सामाजिक कार्यों को निरंतर करते रहना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि नारियों की दुरवस्था तथा दुःखियों दीनों और असहायों की पीड़ा ने उसके हृदय में करुणा के भाव भर दिये थे। यही कारण है कि उनके अनेक काव्य ग्रंथों में नारियों की पुनर्प्रतिष्ठा एवं पीड़ित के प्रति सहानुभूति झलकती है। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि स्वाधीनता सेनानी, राष्ट्र चेतना के महान कवि, पद्मभूषण मैथिलीशरण गुप्त जी का जीवन आज के युवाओं के लिए प्रेरणा पुंज हो सकता है। युवा सामाजिक कार्यकर्ता संयम भगत ने तनाव मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

हृदयाघात से बचाव पर गोष्ठी सम्पन्न

दैनिक हल्के व्यायाम से हृदयाघात से बचाव सम्भव –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

हृदयाघात से बचाव के लिए चिकनाई, मसालों से करे परहेज –डॉ सुनील रहेजा, एम एस, पंत अस्पताल

रविवार,13 दिसम्बर 2020,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में कोरोना में हृदयाघात से बचाव विषय व संसद हमले की 19 वीं तिथि पर वीर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई व ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन जूम पर किया गया।यह कोरोना काल में परिषद का 134 वां वेबिनार था। जी पी पंत अस्पताल के एम एस डॉ सुनील रहेजा ने कहा कि हृदय रोगियों को हृदयाघात से बचने के लिए अपनी जीवन शैली में सुधार करना आवश्यक है।रोगियों को चिकनाई युक्त खाद्य पदार्थों और तनाव का त्याग,शारीरिक व्यायाम के साथ फलों और हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए।हल्के व्यायाम और घूमने से दिल की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और हाथ,पैरों की धमनियां स्वस्थ होती हैं।अधिक मसाले व चिकनाई हानिकारक है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि दिनचर्या में हल्के व्यायाम को समिलित करने से बचाव हो सकता है।साथ ही 19 वर्ष पूर्व संसद हमले में मारे गए शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए याद किया।उन्होंने कहा कि देश 2001 में इस दिन अपनी संसद पर हुए कायरतापूर्ण हमले को कभी नहीं भूल पायेगा।हम आज उन लोगों की वीरता और बलिदान का स्मरण करते हैं जिन्होंने हमारी संसद की रक्षा करते हुए अपने प्राण गंवाए।देश के जवानों पर हम सभी को गर्व है। उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश बंसल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि विश्व भर में हृदय रोग से पीड़ित लोग अपने बचाव के लिए सब कुछ करने के बाद भी जीवन बचाने में असमर्थ रहते हैं।योग के दैनिक जीवन में प्रयोग से हृदय रोग से बचना संभव है।हृदय को प्राप्त रक्त संचार कम होने से वह आगे रक्त प्रसारण करने में असमर्थ होकर कार्य रोकता है और हृदयाघात होता है।धमनियों में मोटे रक्त (अधिक कोलेस्ट्रॉल) का संचार सुचारु रूप से नहीं होना इसका प्रमुख कारण है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि हार्ट फेलर दृ रक्त एकत्रीकरण से दिल कमजोर हो जाता है,जिससे यह रक्त को पूरे शरीर में पहुँचा नहीं पाता है इस तरह अंततः यह हार्ट फेल होने का कारण बनता है। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा कि संसद हमले में बलिदान जवानों के सर्वोच्च बलिदान का देश सदैव ऋणी रहेगा।देश के युवा उनकी कुर्बानी से प्रेरणा लें। गायिका दीप्ति सपरा,सविता आर्या,प्रवीना ठक्कर,जनक अरोड़ा,रविन्द्र गुप्ता,प्रतिभा कटारिया,रजनी गोयल आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य रूप से आनन्द प्रकाश आर्य,यशोवीर आर्य,कुमकुम खोसला,देवेन्द्र गुप्ता,संतोष शास्त्री,प्रकाशवीर शास्त्री, ओमप्रकाश नागिया,मधु बेदी, अर्जुन कालरा,डॉ रचना चावला आदि उपस्थित थे।

ईश्वर, वेद और ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्यसमाज के इतिहास में ऋषि दयानन्द के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रमुख स्थान है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बरेली में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये थे और और उनके उद्देश्यों व कार्यों को यथार्थ रूप में जाना व समझा था। उन्होंने मन वचन व कर्म से उनके कार्यों को पूरा करने के लिये यथासम्भव कार्य किया। उनके जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें उनका एक महत्तम कार्य प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति की देन गुरुकुल पद्धति को पुनर्जीवित करना था। इसके लिए उन्होंने हरिद्वार के कांगड़ी ग्राम में एक गुरुकुल की स्थापना की थी। यह कार्य कितना कठिन व जटिल था, इसका अनुमान भी हम नहीं लगा सकते। प्रथम कार्य तो गुरुकुल के लिये वृहद भूभाग की व्यवस्था सहित वहां भवनों के निर्माण के लिये धन संग्रह करना था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस कार्य को जिस उत्साह, श्रद्धा तथा त्यांगपूर्वक किया वह प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक है। इतिहास में इस प्रकार के उदाहरण मिलना कठिन है। गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की स्थापना सन् 1902 में की गई। बहुत तीव्रता से गुरुकुल ने प्रगति की और यह देश का शिक्षा का एक आदर्श राष्ट्रीय संस्थान बना। इसकी कीर्ति व यश का अनुमान हम इसी बात से लगा सकते हैं कि इसकी सुगन्ध को इग्लैण्ड में बैठे लोगों ने भी अनुभव किया था और वहां ब्रिटिश राजनेता जेम्स रैमसे मैकडोनाल्ड (1866–1937) के नेतृत्व में कुछ प्रतिनिधि गुरुकुल कांगड़ी को देखने हरिद्वार पधारे थे। श्री रैमसे मैकडोनाल्ड बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने थे। अपनी गुरुकुल की यात्रा में उन्होंने लिखा था कि यदि किसी को जीवित ईसामसीह के दर्शन करने हों तो उसे स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन करने चाहिये। न केवल रैमसे मैकडोनाल्ड अपितु उन दिनों के वायसराय चेल्म्सफोर्ड भी गुरुकुल कांगड़ी में आये थे। उन्होंने गुरुकुल को देखा था और जाते हुए गुरुकुल को सरकारी आर्थिक सहायता का प्रस्ताव भी किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अनेक कारणों से वायसराय जी की ओर से गुरुकुल को प्रस्तावित आर्थिक सहायता को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया था। इस घटना से यह अनुमान लगता है कि उन दिनों के हमारे पूर्वज तप, त्याग, पुरुषार्थ में विश्वास रखते थे और सुविधाभोगी नहीं थे अन्यथा आज हम इस प्रकार के प्रस्ताव को ठुकराने की कल्पना भी नहीं कर सकते। देश की स्वतन्त्रता के बाद के गुरुकुल के अधिकारियों ने सरकार से गुरुकुल कांगड़ी को मान्यता एवं आर्थिक सहायता प्राप्त कराई। आज का गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य रामदेव के स्वप्नों का गुरुकुल नहीं है। गुरुकुल का उद्देश्य वेद, वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा करने के साथ वेद का देश–देशान्तर में प्रचार करना है। आज यह उद्देश्य किस सीमा तक पूरा हो रहा है, सभी आर्यजन इससे भली भांति परिचित हैं। अतीत में गुरुकुल ने हमें अनेक वैदिक विद्वान, वेद भाष्यकार, पत्रकार, शिक्षा शास्त्री, देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक, शिक्षक, राजनेता, व्यवसायी आदि दिये हैं। देश की स्वतन्त्रता के बाद हम प्रायः सभी क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखते हैं। यही स्थिति आर्यसमाज और स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रिय गुरुकुल की भी हुई है। आज स्थिति यह है कि आर्यसमाज व देश में स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान योग्य, त्यागी, तपस्वी व समर्पित विद्वान व नेता नहीं है जिसके लिये ईश्वर, वेद और आर्यसमाज से बढ़कर कुछ न हो तथा वह वेद और ऋषि दयानन्द के उद्देश्यानुसार 'कृण्वन्तो विश्मार्यम्' के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वात्मा उच्च योग्यता को धारण किये होकर संघर्षरत हो।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वेद और आर्यसमाज की आध्यात्मिक एवं समाज सुधार की विचारधारा का सर्वाधिक प्रचार किया। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान भी रहे। यह सभा आर्यसमाज की सबसे अधिक प्रभावशाली एवं गतिशील संस्था थी। आपने समाज सुधार के सभी कार्यों को पूरी लगन एवं संगठित रूप से किया। अपने जीवन काल में अनेक गुरुकुलों को स्थापित किया। ब्रह्मचारियों को वेदाध्ययन एवं वेदप्रचार की प्रेरणा की। आपका अपना जीवन भी वेद प्रचार का जीवन्त उदाहरण था जिससे लोग प्रेरणा लेते थे। आप समाज में दलित समस्या से पूर्णतः परिचित थे। जन्मना–जातिवाद की बीमारी के दुष्प्रभावों से भी आप परिचित थे। आपने जन्मना जातिवाद, भेदभाव व छुआछूत के उन्मूलन के लिये भी कार्य किया। डा0 अम्बेडकर भी स्वामी जी के जाति सुधार एवं दलितोद्धार के कार्यों के प्रशंसक थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपने ''सद्धर्म प्रचारक'' नामक उर्दू पत्र का प्रकाशन किया था। बाद में राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी की महत्ता से परिचित होने पर आपने घाटा उठाकर भी इसे हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। एक प्रकार से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पंजाब के उर्दू भाषी हिन्दुओं को देश की एकता का आधार हिन्दी भाषा पढ़ाई थी। आपका प्रेस लाखों रुपये मूल्य का था जिसे आपने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब को दान कर दिया था। आप देश के प्रेरणादायक सर्वस्व दानी धर्मप्रचारक व सामाजिक नेता थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी जिन दिनों जालंधर में वकालत करते थे, उन दिनों आपकी वकालत खूब चलती थी। आर्यसमाज से प्रेम व धर्म प्रचार के कार्यों की आवश्यकता का विचार कर आपने अपनी वकालत की कमाई पर लात मारकर वेद प्रचार के कार्य को अपनाया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिस त्याग भावना का परिचय दिया, ऐसे लोग कम ही हुए हैं। आपकी जालन्धर में एक बड़ी कोठी थी। इस पर आपके बच्चों का उत्तराधिकार था। आपके दो पुत्र हरिश व इन्द्र तथा तीन पुत्रियां थी। इस सम्पत्ति के मोह पर भी आपने विजय पाई थी और अपने पुत्रों को सहमत कर अपनी जालन्धर की इस कोठी को भी गुरुकुल कांगड़ी को दान देकर 'सर्वमेघ यज्ञ' किया था। ऐसे महान चरित्र के धनी पूर्वजों के होते हुए हम आर्यसमाज में जब पदों के लिये लोगों को गुटबाजी व अधर्माचरण करते हुए देखते हैं तो हमें दुःख होता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इन कार्यो को करते हुए ''शुद्धि'' का कार्य भी किया। शुद्धि का अर्थ है कि अपने जो धर्म–बन्धु भय, प्रलोभन, छल व अज्ञान से विधर्मियों द्वारा बलात् विधर्मी बना लिये गये होते हैं, उन्हें वैदिक धर्म की श्रेष्ठता व ज्येष्ठता समझाकर पुनः अपने पूर्वजों के धर्म में प्रविष्ट कराना। यह कार्य विधर्मियों के अतीत के अनैतिक कार्यों का निवारण होता है। ऋषि दयानन्द ने वेद की 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' आदेश के अनुसार इसकी प्रेरणा की थी। यदि शुद्धि का कार्य न किया जाये तो हमारे विभिन्न मतों के बन्धु सत्य मत व सद्धर्म से परिचित न होने के कारण अभ्युदय एवं निःश्रेयस को प्राप्त करने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष एवं अपनी कामनाओं को सिद्ध नहीं कर सकते। आर्यसमाज ही विश्व का ऐसा एकमात्र संगठन है जो विश्व को सच्चे ईश्वर व आत्मा का स्वरूप बताने के साथ ईश्वर की सच्ची उपासना करना सिखाता है जिससे मनुष्य ईश्वर का प्रत्यक्ष वा साक्षात्कार कर अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ईश्वर, वेद और ऋषि की भावनाओं को समझकर इनका प्रचार किया था और इसमें अपूर्व सफलता प्राप्त की थी। यदि यह कार्य स्वामी श्रद्धानन्द की भावनाओं के अनुरूप जारी रखा जाता तो शायद पाकिस्तान का निर्माण न होता और हमारा भारत खण्डित न होकर अखण्ड भारत बना रहता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी सराहनीय योगदान है। गांधी जी उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। शायद यह कथन मात्र रहा हो। बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी को देश व समाज के व्यापक हित में कांग्रेस से त्याग पत्र देना पड़ा था। जिन दिनों अंग्रेजों द्वारा रालेट एक्ट को लागू किया जा रहा था, देश भर में उसका विरोध हो रहा था। उन दिनों दिल्ली में रालेट एक्ट के विरोध में आन्दोलन का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी के मजबूत हाथों में था। रालेट एक्ट के विरोध में दिल्ली मे एक दिन पूर्ण हड़ताल की गई। सारा बाजार व व्यवसायिक प्रतिष्ठान बन्द थे। दिल्ली में एक विशाल जलूस निकाला गया था जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। यह जलूस चांदनी चौक में लालकिले की ओर बढ़ रहा था। तभी अंग्रेजों के गुरखा सैनिक सामने आये और स्वामी श्रद्धानन्द जी को आगे बढ़ने से रोक दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी भीड़ चीर कर सैनिको के सामने आये तो सैनिकों ने अपनी बन्दूकों की सगीने स्वामी श्रद्धानन्द जी छाती पर तान दी। निर्भीक स्वामी जी ने अपनी छाती खोली और दहाड़ लगा कर उन सैनिको को कहा था ''हिम्मत है तो मेरी छाती पर गोली चलाओ।'' तभी वहां एक अंग्रेज अधिकारी घोड़े पर आ पहुंचा। उसने सैनिको को बन्दूकें नीचे कर लेने को कहा। इससे एक बहुत बड़ी दुर्घटना होते होते टल गई।

इस घटना ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को दिल्ली का बेताज बादशाह बना दिया था। उनके इस शौर्य और देश पर बलिदान होने की साहसिक भावना से प्रभावित होकर जामा मस्जिद के इमाम ने उन्हें मुस्लिम धार्मिक लोगों को सम्बोधित करने के लिये आमंत्रित किया था। स्वामीजी जामा मस्जिद पहुंचे थे और उसके मिम्बर से उन्होंने वेदमन्त्र 'ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभुविथ। अधा ते सुम्नीमहे।।' का पाठ करते हुए मुस्लिम बन्धुओं को सम्बोधित किया था। इस अवसर पर उन्होंने कहा था कि हम शब्द में 'ह' और 'म' दो अक्षर हैं। ह का अर्थ हिन्दू और म का अर्थ मुसलमान है। सभी ने उनकी इस ऊहापूर्ण बात को पसन्द किया था। स्वामी जी पहले व अन्तिम गैर मुस्लिम व्यक्ति थे जिन्हें जामा मस्जिद के मिम्बर से मुसलमानों को धार्मिक उपदेश देने का अवसर मिला। स्वामी जी ने देश की स्वतन्त्रता के लिये अनेक प्रकार से योगदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान भी रहे। उन्हीं के कार्यकाल में सन् 1925 में मथुरा में ऋषि दयानन्द के जन्म की शताब्दी मनाई गई थी। इस कार्यक्रम में लाखों लोग आये थे। व्यवस्था की दृष्टि से यह आयोजन अति सफल रहा था। इस अवसर पर प्रमुख आर्य प्रकाशक श्री गोविन्दराम जी ने सत्यार्थप्रकाश का एक सस्ता संस्करण प्रकाशित किया था। यह जन्म–शताब्दी समारोह महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में आयोजित किया गया था। इसके बाद शायद ऐसा कार्यक्रम आर्यसमाज के इतिहास में नहीं हुआ। आज आर्यसमाज में स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा नारायण स्वामी जैसा कोई नेता नहीं है। आर्यों में वह भावनायें भी नहीं हैं जो उन दिनों के आर्यों में देखने को मिलती थी।

दिनांक 23 दिसम्बर, 1926 को रूग्ण अवस्था में एक मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने स्वामी जी के दिल्ली स्थिति निवास पर पहुंच कर धोखे से उन्हें कई गोलियां मारकर शहीद कर दिया। मनुष्य मर सकता है परन्तु सत्य नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी आज भी हमारे दिल में जीवित हैं। आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द जी का अनुकरण करना चाहिये। स्वामी जी को हमारा नमन हैं। हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—96 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

131वी जयंती पर खुदीराम बोस को किया नमन व महाशय धर्मपाल जी को दी श्रद्धांजलि

अमर शहीद खुदीराम बोस नीव के पत्थर बने –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

वीरवार,3 दिसम्बर 2020, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने देश की आजादी के महान क्रांतिकारी खुदीराम बोस की 131 वी जयन्ती पर गूगल मीट पर याद किया व मसालों के बादशाह, एम डी एच के मालिक महाशय धर्मपाल जी के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि 19 वर्ष की आयु में फाँसी के फंदे पर झूलने वाले सबसे कम आयु के क्रांतिकारी थे, उन्होंने बंग भंग के आंदोलन में भी भाग लिया। आज युवाओं के ऐसे देश भक्तों से प्रेरणा लेकर आजादी की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए ।साथ ही अनिल आर्य ने महाशय धर्मपाल जी को भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पाकिस्तान से दिल्ली आकर बारा टूटी चौक से सदर बाजार तांगा चलाने वाला व्यक्ति एक मसालों का बादशाह बना । वह आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के भी कई वर्षों से प्रधान चल रहे थे व अनेको आर्य संस्थाओं, गुरुकुलों की अपार आर्थिक सहायता भी करते थे । 96 वर्षीय महाशय जी के चले जाने से एक युग का अंत हो गया है। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह,एमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक आनन्द चौहान, आंनद प्रकाश आर्य(हापुड),उत्तर प्रदेश प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य,आचार्य महेन्द्र भाई, धर्मपाल आर्य,सौरभ गुप्ता, नरेंद्र आहूजा विवेक, उर्मिला आर्या, दीप्ति सपरा,ओम सपरा, यशोवीर आर्य,आस्था आर्या, दुर्गश आर्य,देवेन्द्र भगत आदि ने भी आर्य नेता महाशय धर्मपाल जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कर्मयोगी की संज्ञा दी।

कोरोना काल में 128 वीं आर्य गोष्ठी सम्पन्न

वैदिक संस्कृति से ही नैतिक मूल्यों की स्थापना सम्भव –डॉ कल्पना रस्तोगी
प्रदुषण मुक्ति के लिए यज्ञ व वृक्षारोपण आवश्यक –अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

मंगलवार, 1 दिसम्बर 2020, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में वैदिक संस्कृति में नैतिकता के मोती विषय व राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन गूगल मीट पर किया गया।परिषद का कोरोना काल में 128 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी डॉ कल्पना रस्तोगी ने जोर देकर कहा कि वैदिक संस्कृति सर्वोत्तम है,इसके अनुसरण से ही नैतिक मूल्यों की रक्षा हो सकती है।उन्होंने कहा कि वैदिक संस्कृति में अनेकों महापुरुषों व आर्ष ग्रंथों के माध्यम से सद विचारों का प्रतिपादन होता रहता है जिससे नैतिकता बनी रहती है।आर्य समाज श्रेष्ठ लोगों का समूह है और श्रेष्ठता को नैतिकता की कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है।वेद और आर्ष ग्रंथों के स्वाध्याय करने वाले व्यक्तियों का मन सर्वदा प्रफुल्लित रहता है और वे समाज व राष्ट्र के लिए समर्पित रहते है।नैतिकता की कमी से बच्चों में अशिष्टता पैदा हो रही है।बच्चों में अनैतिकता का एक कारण माता–पिता के पास समय का अभाव होना भी है।माता पिता वैदिक साहित्य का पठन पाठन करें और बच्चों में संस्कार का बीजारोपण करें तो बच्चों में नैतिकता का भाव बना रहेगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि प्रत्येक वर्ष भारत में 2 दिसम्बर को ष्राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवसष के रूप में मनाया जाता है।यह दिवस उन लोगों की याद में मनाया जाता है,जिन्होंने श्भोपाल गैस त्रासदीश में अपनी जान गँवा दी थी।उन मृतकों को सम्मान देने और याद करने के लिये भारत में हर वर्ष इस दिवस को मनाया जाता है।हजारों लोगों की एमआईसी की जहरीली गैस के रिसाव के कारण मृत्यु हो गयी थी।इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य है औद्योगिक आपदा के प्रबंधन और नियंत्रण के लिए जागरूकता फैलाना,साथ ही हवा,पानी और मिट्टी को प्रदूषित होने से बचाना और उनमें होने वाले प्रदूषण की रोकथाम के लिए अलग–अलग तरह से समाज में जागरूकता फैलाना है,हमें चाहिए कि इस दिन प्रदूषण कम से कम करने का संकल्प लें और पेड़ पौधे लगाए तथा घर घर यज्ञ करवाये।इसके साथ ही वैचारिक प्रदूषण से भी मुक्त होना आवश्यक है । कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेत्री उर्मिला आर्या ने कहा कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने कोरोना काल को भक्तिमय कर दिया।स्वास्थ्य,अध्यात्म,वैदिक संस्कृति, महापुरुषों की जीवन गाथा आदि अनेकों विषयों के ज्ञान की गंगा में लोगों को तृप्त करने के लिए उन्होंने साधुवाद दिया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि जब बच्चे को हमारे साथ की जरूरत थी तो हम पैसे के पीछे भागते रहे और संस्कार,शिष्टाचार व नैतिकता नाम की चीज उसे मिल ही नहीं पाई।नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति की पहचान हैं,जोकि हमें हमारे पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर हैं। प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता ने कहा कि संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान नैतिकता से है और नैतिकता का आधार वैदिक संस्कृति व आर्ष ग्रन्थों में वर्णन मिलता है। गायिका दीप्ति सपरा,संध्या पांडेय,सुषमा बुद्धिराजा,रविन्द्र गुप्ता,जनक अरोड़ा,इंद्रा गुप्ता, ईश्वर देवी(अलवर),संतोष आर्या, रजनी गोयल आदि ने मधुर गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य नेता आनन्द प्रकाश आर्य, सुरेश आर्य,यज्ञवीर चौहान,डॉ सुषमा आर्या,देवेन्द्र गुप्ता,संतोष शास्त्री,वीना वोहरा,प्रकाशवीर शास्त्री आदि उपस्थित थे।

स्वतन्त्रता सेनानी भाई परमानन्द की 73वीं पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाजियों की अहम भूमिका –स्वामी अखिलानंद जी, गुरुकुल पूठ, हापुड़
भारत बंद समस्या का हल नहीं है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार, 7 दिसम्बर 2020,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में भाई परमानन्द जी की 73 वीं पुण्यतिथि पर भारतीय संस्कृति का उत्थान कैसे हो विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन गूगल मीट पर किया गया।यह कोरोना काल मे 131वां वेबिनार था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि भाई परमानन्द जी का स्वतंत्रता संग्राम में अहम योगदान रहा,वह महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरणा पाकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।भाई जी बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे।वे जहाँ आर्यसमाज और वैदिक धर्म के अनन्य प्रचारक थे, वहीं इतिहासकार,साहित्य मनीषी और शिक्षाविद् के रूप में भी उन्होंने ख्याति अर्जित की थी। सरदार भगत सिंह,सुखदेव,पं० राम प्रसाद शबिस्मिलश,करतार सिंह सराबा जैसे असंख्य राष्ट्रभक्त युवक उनसे प्रेरणा प्राप्त कर बलि–पथ के राही बने थे।देशभक्ति,राजनीतिक दृढ़ता तथा स्वतन्त्र विचारक के रूप में भाई जी का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा।आपने कठिन तथा संकटपूर्ण स्थितियों का डटकर सामना किया और कभी विचलित नहीं हुए।आपका स्पष्ट मत था कि इतिहास में जाति की भावनाओं, इच्छाओं,आकांक्षाओं,संस्कृति एवं सभ्यता को भी महत्व दिया जाना चाहिए।आपने अपने जीवन के संस्मरण भी लिखे हैं जो युवकों के लिये आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं।हमें अपने क्रांतिकारियों को याद रखना चाहिए व उनके बलिदान से राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत बंद समस्या का हल नहीं है आपसी बातचीत से ही निदान ढूंढना चाहिए। आर्य संन्यासी स्वामी अखिलानंद जी(आचार्य,गुरुकुल पूठ,हापुड़) ने कहा कि वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष हैं।यदि सकारात्मक पक्ष विकास,आर्थिक उन्नति, औद्योगिकीकरण,उत्पादकता और रोजगार है तो नकारात्मक पक्ष संस्कृति का पतन, अपसंस्कृति का उत्थान और शोषित वर्ग का और भी शोषण है।उन्होंने कहा कि युवा वर्ग भारतीयता से दूर होता जा रहा है।नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है।परिणाम स्वरूप मानवता कराह रही है।इन समस्याओं को दूर करने के लिए बुद्धिजीवी खासकर शिक्षक समाज को आगे आना होगा।भौतिक संसाधनों का विकास हो रहा है तो वहीं प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हो रहा है,जो मनुष्य के अस्तित्व को ही खतरे में डाल सकता है। पर्यावरण संतुलन के लिए उपयोगी विविध वनस्पति और जंतु विलुप्त हो रहे हैं।अब हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवित रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेता राजपाल सिंह आर्य (प्रधान,आर्य विद्या सभा,शामली) ने कहा कि नयी पीढ़ी को अपने देश भक्तों के बारे में पढ़ाने की आवश्यकता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि युवाओं को भारतीय संस्कृति से अवगत कराकर राष्ट्र को परम वैभव के शिखर पर पुनः स्थापित किया जा सकता है। प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता ने कहा कि जतीन के नाम से विख्यात बंगाल के क्रान्तिकारी स्व. जतीन्द्रनाथ मुखर्जी की आज 141वें जयंती पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के 43वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी महावेबनार

दिनांक 29,30 व 31 जनवरी 2021 (शुक.,शनि. व रविवार)

समस्त कार्यक्रम Zoom Apps और Facebook Live पर

कार्यक्रमः—

दिनांकः शुक्रवार, 29 जनवरी 2021ः—

प्रातः 9 से 10 बजे तक, यज्ञः ब्रह्माः आचार्य अखिलेश्वर जी

प्रातः 11 से 1.00 बजे तक, आर्य महिला सम्मेलन

सायं 4 से 6 बजे तक, भक्ति संगीत व आचार्य संजीव रूप जी द्वारा संगीतमय वेद कथा

दिनांकः शनिवार, 30 जनवरी 2021ः—

प्रातः 9 से 10 बजे तक, यज्ञः ब्रह्माः आचार्य अखिलेश्वर जी

प्रातः 11 से 1.00 बजे तक, आर्य युवा सम्मेलन

सायं 4 से 6 बजे तक,भक्ति संगीत व आचार्य संजीव रूप जी द्वारा संगीतमय वेद कथा

दिनांकः रविवार, 31 जनवरी 2021ः—

प्रातः 9 से 10 बजे तक, यज्ञः ब्रह्माः आचार्य अखिलेश्वर जी

प्रातः 11 से 1.00 बजे तक, आर्य महासम्मेलन

सायं 4 से 6 बजे तक, आचार्य संजीव रूप जी द्वारा संगीतमय वेद कथा व समापन।

आह्वानः— आप सभी आर्य जनों से अनुरोध है कि यज्ञ के समय अपने अपने निवास पर/आर्य समाज में ''यज्ञ'' करके सोशल मीडिया पर लाइव चलायें व परिषद् के वार्षिक संकल्प 251 कुण्डीय यज्ञ को पूरा करने के लिये सहभागी बने। आपके पूर्ण सहयोग की कामना के साथ — अनिल आर्य, मो. 9810117464

ज्ञान कर्म व भक्ति योग पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

ज्ञान पूर्वक कर्म ही भक्ति है —नरेन्द्र आहूजा विवेक

पुरुषार्थ ही है सफलता का आधार —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

मंगलवार 1 दिसंबर 2020, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में ज्ञान, कर्म व भक्ति योग पर ऑनलाइन गोष्ठी गूगल मीट पर आयोजित की गई। यह परिषद का कॅरोना काल में 127 वा वेबनार था। हरियाणा सरकार के राज्य ओषधि नियंत्रक नरेन्द्र आहूजा विवेक ने कहा कि गीता ज्ञान, कर्म भक्ति की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक और मनुष्य को जीवन जीने की शैली सिखाता है और निराशा को दूर करता है। उन्होंने कहा कि युद्ध भूमि में द्वन्द में फसा अर्जुन मोह,माया और ममता के कारण ही अपने कर्तव्य के निवर्हन में पीछे हट रहा था और श्री कृष्ण जी अर्जुन की शंकाओं व विषाद का निवारण करते हुए गीता का उपदेश दिया था। गीता के उपदेश को यजुर्वेद के 40 वें अध्याय के दूसरे मन्त्र का विस्तार बताते हुए विवेक ने कहा कि ज्ञान योग से हमें अपने और ईश्वर के सही स्वरूप और स्थिति एवं सही मार्ग का बोध होता है। कर्म योग से हम ज्ञान पूर्वक कर्म करते हुए उस वेद धर्म आर्य सिद्धान्तों के मार्ग पर चलकर अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञ कार्य ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं। देव दयानन्द ने सन्सार का उपकार करना ही मुख्य उद्देश्य बतलाया है।भक्ति योग में ईश्वर की प्रत्येक आज्ञा का यथावत पालन करते हुए हम ईश्वर की सच्ची भक्ति कर उसके आनन्द में निमग्न रहकर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि पुरुषार्थ ही जीवन में सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला है । व्यक्ति को निरन्तर कर्म करते रहना चाहिए। व्यक्ति के कर्म वेद ज्ञान आधारित होने चाहिए और हम अपने कर्मों को लेखनी बनाकर ही अपना प्रारब्ध किस्मत या नियति लिखते हैं। हमें अपने किए प्रत्येक शुभ वा अशुभ कर्म का फल अवश्य मिलता है। कार्यक्रम अध्यक्ष आर्य नेता मदनलाल तनेजा ने कहा कि वेद भी कर्मशील मनुष्य का गुणगान करते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि गीता के तीसरे अध्याय में कर्मयोग का वर्णन मिलता है। गीता में कहा है कि मनुष्य में कर्म करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। एक क्षण भी मनुष्य कर्म किये बिना नहीं रह सकता।इसलिए मनुष्य निम्न कोटि के साधक के लिए कर्म योग को उपयुक्त बताया गया है। योगाचार्य सौरभ गुप्ता ने कहा की गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ईश भक्ति करने वाले योगियों की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जो परमेश्वर के सगुण रूप में मन लगाकर, नित्य परमेश्वर की सगुण भक्ति में तत्पर परमश्रद्धा से ईश्वर की सगुण उपासना करते हैं, वे योगियों में श्रेष्ठ योगी हैं। गायिका दीप्ति सपरा,प्रतिभा सपरा,रजनी गोयल,संध्या पांडेय,रविन्द्र गुप्ता,सविता आर्या,डॉ विवेक कोहली,नरेश खन्ना,संगीता आर्या गीत आदि ने मधुर गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। आचार्य महेन्द्र भाई,यशोवीर आर्य,ईश आर्य,आनन्द प्रकाश आर्य,राजश्री यादव,विचित्रा वीर,प्रतिभा सपरा,नरेन्द्र सोनी,यज्ञवीर चौहान,बिन्दु मदान, रजनी गोयल ,जनक अरोड़ा आदि उपस्थित थे।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970